B.A Part — I
Paper — I
B.A. Part — I

Prof. Randhir Kr. Singh
Asso Prof
Dept of sociology
Patna College. P.U

M-9546991571

Topic — principal of social stratification.

अपने आसपास देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि समाज असमान प्रकृति वाला है। कहीं अमीर, कहीं गरीब, कहीं व्यापारी है। समाज हर जगह आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक वर्गों में विभाजित है। सामाजिक स्तरीकरण का अर्थ है समाज का विभिन्न वर्गों में वर्गीकरण। विद्वानों और चिन्तकों ने स्तरीकरण को परिभाषित किया है।

Murray — के अनुसार " सामाजिक स्तरीकरण समाज का उच्च और निम्न भागों में समानान्तर विभाजन है"

Gisbert के अनुसार —" सामाजिक स्तरीकरण समाज का उच्चता और निम्नता के सम्बन्धों से बन्धा स्थायी समूहों में विभाजन है।

Mayer के अनुसार " सामाजिक स्तरीकरण सामाजिक स्थिति की स्थितियों की विभिन्नता की प्रणाली है। इसमें रहने वाले लोगों को सामाजिक गतिविधियों के अनुसार उच्च, निम्न या समान माना जाता है।"

इस प्रकार सामाजिक स्तरीकरण समाज को विभिन्न भागों में बाँटता है। कुछ व्यक्ति अवसरों और विशेषाधिकारों के आधार पर दूसरों से ऊपर माने जाते हैं। अतः कहा जा सकता है कि असमान अवस्थाएँ ही सामाजिक स्तरीकरण का विशेषक है और सामाजिक स्तरीकरण की परिभाषा है अवस्थाओं के आधार पर समाज का वर्गीकरण।

सामाजिक स्तरीकरण के लिए स्थिति या अवस्था एक महत्वपूर्ण तत्व है। MacIver के अनुसार अवस्था वह 'सामाजिक स्थिति है जो इसके प्राप्तकर्ता के लिए, व्यक्तिगत गुणों और समाज सेवा के बिना भी, उन्नत

P.T.O

प्रतिष्ठा और प्रभाव का विश्लेषण करती है। इसमें कुछ सामाजिक विशेषाधिकारों का निर्माण होता है। ये विशेषाधिकार जीवन-स्तर और साधनों के रहने-सहने का ढंग का निर्धारण करते हैं। अतः उच्च वर्ग को ऊँची स्थिति प्रदान की जाती है।

सामाजिक वर्ग की स्थिति, समाज में प्रचलित गुणों से कुछ अधिक और समुदाय द्वारा मान्य गुणों के आधार पर, निश्चित होती है। ज्ञान की संपत्ति से अधिक महत्त्व देकर एक विद्यार्थी को धनवान व्यक्ति से उच्च स्थिति प्रदान की जा सकती है और इस तरह इसका उलट भी हो सकता है।

सिद्धान्त →

Ⓐ Marxist Theory → इस सिद्धांत के अनुसार सामाजिक वर्ग उत्पादन के साधनों से सम्बन्धित है और उत्पादन के साधनों पर ही निर्भर होते हैं। मार्क्स ने समाज को वर्गों में बाँटा है। Prolectriat and Bourgeoisie। काम करने वाला वर्ग गरीब और धनी वर्ग पूँजीपति लोगों का प्रतिनिधित्व करती है। व्यक्ति को उत्पादन के साधनों से सम्बन्धित मानकर यह सिद्धान्त वर्ग चेतना को जन्म देता है।

Ⓑ Functionalist Theory → यह सिद्धान्त कार्यात्मकता की सामान्य भावना पर आधारित है। ऐसा कोई समाज नहीं है जिसमें स्तर नहीं है। विभिन्न लोगों को विभिन्न प्रकार के काम दिए गए हैं जिसका परिणाम होता है वर्ग विभाजन और सामाजिक स्तरीकरण।

सामाजिक स्तरीकरण के स्वरूप →

① Slavery — गुलाम शब्द का प्रयोग ऐसे व्यक्तियों के लिये किया जाता है जिसे कानून तथा प्रथा किसी दूसरे व्यक्ति की सम्पत्ति मानता है। गुलामी में प्रत्येक गुलाम के लिये एक मालिक होता है। जिसकी शक्ति असीमित होती है। गुलामों को निम्न कोटि मानकर राजनैतिक अधिकार नहीं दिये जाते। इस दास प्रथा का आधार मुख्यता आर्थिक है।

P.T.O

③

(ii) Estates → मध्यकाल की जागीरदारी की प्रथा भी सामाजिक स्तरीकरण का एक कारण है। इसका आधार कानूनी था और अनेक कार्य सम्पन्न करने के कारण श्रम-विभाजन भी था। ये जागीरें राजनैतिक समूहों के अड्डे भी थे।

(iii) Caste → भारतवर्ष में जाति की प्रथा भी एक विशेष प्रथा ही है। इसका सम्बन्ध आर्थिक असमानताओं से है। पुरातन समय में चार वर्णों से जातियों में कार्य विभाजन स्पष्ट हो जाता है। जातियां भारत में कार्यकारी समूह भी है।

(iv) Social class → सामाजिक वर्ग-प्रणाली आर्थिक कारणों पर आधारित होती है। यह व्यापारिक समाज की स्थितियों का प्रतिनिधित्व करती है। अतः व्यापारिक समाज उच्च, मध्य और निम्न वर्गों में विभाजित होता है। काम की असमानता के प्रकार समाज में कारणों की निम्न आधारों पर विभाजित किया जाता है

① आयु ② यौन ③ वंश-परम्परा ④ आर्थिक स्थिति ⑤ राजनैतिक स्थिति ⑥ धर्म ⑦ ज्ञान ⑧ एकता ⑨ स्तर।

Kingslay Divis ने स्तरीकरण के लिये की आवश्यकता पर जोर डाला है।

Sorokin ने सामाजिक स्तरीकरण को वंश-परम्परा की असमानता और वातावरण पर निर्भर माना है

Gumplowiez and oppenheimer इत्यादि ने एक समूह का दूसरे समूह पर अधिकार को सामाजिक स्तरीकरण का आधार माना है

——— x ———